भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

सेंट्रल रीजनल ब्यूरो

प्रेस विज्ञप्ति

19 अप्रैल 2013

पुव्वार फासीवादी हत्याकाण्ड का खण्डन करो!

आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र व ओड़िशा के पुलिस, विशेष कमाण्डो/ग्रेहाउण्ड्स व केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों द्वारा सेंट्रल रीजियन में चलाए जा रहे हत्याकाण्डों और विध्वंस के खिलाफ...

27 अप्रैल को सेंट्रल रीजियन बंद सफल बनाओ!

16 अप्रैल 2013 को आंध्रप्रदेश की सीमा पर छत्तीसगढ़ के सुकमा जिला, कोंटा ब्लॉक के पुव्वार गांव में एपी ग्रेहाउण्ड्स, छत्तीसगढ़ पुलिस और सीआरपी–कोबरा बलों द्वारा खम्मम एसपी रंगनाथ और कोत्तागूडेम ओएसडी के नेतृत्व में, मुखबिरों से मिली पक्की सूचना के साथ हमला कर उत्तर तेलंगाना के पांच महिला कामरेडों समेत नौ कामरेडों की हत्या कर दी। इस हमले में कामरेड्स मर्री रवि उर्फ सुधाकर (उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य), गुगलोत लक्ष्मी उर्फ पुष्पा (केकेडब्ल्यू डीवीसीएम), वेट्टि नरसक्का उर्फ सबिता (एटूरनागारम एसी सचिव), दुर्गम राजू (एसीएम), रीना (एसीएम), वेट्टि रामक्का उर्फ ऊर्मिला (एसीएम), मद्दि सीता उर्फ नवता (डीवीसीएम की गार्ड), मड़काम भीमा उर्फ अजय (डीवीसीएम का गार्ड) और अरलि वेंकटि उर्फ गौतम (एसजेडसीएम का गार्ड) शहीद हो गए। सेंट्रल रीजनल ब्यूरो इन तमाम शहीदों को लाल–लाल जोहार पेश करते हुए उनके सपनों को साकार करने की शपथ लेता है। एपी ग्रेहाउण्ड्स पिछले कुछ सालों से दण्डकारण्य में घुसकर इस तरह के हत्याकाण्डों और तबाही को अंजाम देते आ रहे हैं। 2008 में हुए कंचाल हत्याकाण्ड के बाद यह और एक भारी हत्याकाण्ड है। हमारी पार्टी इस हत्याकाण्ड की कड़ी निंदा व खण्डन करते हुए जनता और पीएलजीए का आह्वान करती है कि पुलिस, ग्रेहाउण्ड्स और अर्द्धसैनिक बलों के हमलों का प्रतिरोध किया जाए।

पिछले चार महीनों से दण्डकारण्य, आंध्र–ओड़िशा सीमांत जोन, उत्तर तेलंगाना व गोंदिया (महाराष्ट्र) के इलाके पुलिस, ग्रेहाउण्ड्स और अर्द्धसैनिक बलों के लौह पैरों तले रौंदे जा रहे हैं। हर दिन, हर कोने से सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा मचाए जा रहे हत्याकाण्डों, फर्जी मुठभेड़ों, विध्वंस और आतंक से जुड़ी खबरें आ रही हैं। खुद को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बताने वाले भारत के शोषक शासक वर्ग सदियों से अत्यंत क्रूरतापूर्ण शोषण, उत्पीड़न, दमन, अन्याय, भेदभाव और उपेक्षा की शिकार जनता पर, खासकर आदिवासियों पर अभूतपूर्व पाशविकता बरत रहे हैं। दण्डकारण्य में पिछले दस दिनों के दरमियान कम से कम 20 क्रांतिकारियों और आम जनता को फर्जी मुठभेड़ों में कत्ल कर दिया गया। खासकर आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओड़िशा और महाराष्ट्र के सीमावर्ती इलाकों में विभिन्न राज्यों के पुलिस व कमाण्डो बल और केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल संयुक्त आपरेशन चलाकर मनमानी मुठभेड़ों, हत्याकाण्डों और विध्वंसकाण्ड को अंजाम दे रहे हैं। हाल ही में छत्तीसगढ़ के सुकमा में और आंध्रप्रदेश के करीमनगर जिले के काटारम में चार राज्यों के पुलिस के आला अधिकारियों ने विशेष बैठकें कर इन ताजा हमलों की साजिश रची। वायु सेना के हेलिकाप्टरों और मानवरहित विमानों के प्रयोग को बढ़ाने के अलावा वायुसेना के जरिए हवाई हमले करने की योजना पर भी वो काम कर रहे हैं। दूसरी ओर सेना के प्रशिक्षण के बहाने माड़ क्षेत्र पर कब्जा कर क्रमगत रूप से जनता के खिलाफ जारी युद्ध में सेना की तैनाती करने की योजना भी उनके एजेंडे में है। इन हमलों के जरिए जनता द्वारा निर्मित हो रही नई राजसत्ता को, उसकी गुरिल्ला सेना को और उसकी पार्टी को जड़ से खत्म करने पर जोर लगा रहे हैं। हाल में हुई कुछ अन्य घटनाएं इस बात का सबूत हैं।

- 12 अप्रैल को महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिला, धनोरा तहसील के सिंदेसूर गांव में जनता जब गुरिल्ला सैनिकों को भोजन की व्यवस्था कर रही थी तब पुलिस ने अचानक हमला किया जिसमें कामरेड कैलास

उर्फ पंकज (एसीएम) और कामरेड चम्पा नुरोटी (कम्पनी–4 की सदस्या) के अलावा गांव की दो निहत्थी महिलाएं वसंती कोवासी और संगीता आत्रम को गोली मार दी गई।

- 4 अप्रैल को इसी जिले के भामरागढ़ तहसील, भटपार गांव में जनता के साथ बैठक करने वाले गुरिल्ला दस्ते पर सी–60 कमाण्डों ने अंधाधुंध गोलीबारी की जिसमें कामरेड लक्ष्मण (एसीएम), मिलिशिया सदस्य कामरेड्स प्रकाश और सुधाकर के अलावा गांव की अम्मी और सुनिता नामक दो किशोरियों की हत्या की गई।
- 2 अप्रैल को छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिला, माड़ क्षेत्र के ग्राम कोंगे में हमला कर जंगल में शिकार पर गए छह भोलेभाले आदिवासियों को पकड़कर ले जाया गया और उन्हें 'इनामी नक्सली' के रूप में पेश किया गया। इसके पहले गांव के अंदर घुसकर डकैतों की तरह लूटपाट और तबाही मचाई।
- 14 मार्च को महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिला, खोब्रामेण्डा गांव के जंगलों में पार्टी नेतृत्व का सफाया करने के लक्ष्य से भारी हमला किया गया।
- 9 मार्च को बीजापुर जिला, कंचाल गांव के पास एपी ग्रेहाउण्ड्स द्वारा की गई गोलीबारी में कुंजाम देवे नामक ग्रामीण महिला की मौत हुई और एक अन्य महिला घायल हुई। देवे की लाश और घायल महिला को हेलिकाप्टर में ले जाकर वर्दी पहनाकर उन्हें नक्सलवादी घोषित किया गया।
- 1 मार्च को नारायणपुर जिले के मांदोड़ा गांव में मिलिशिया सदस्यों पर अंधाधुंध गोलीबारी कर कामरेड गुधराम नेंडी की हत्या की।
- 24 फरवरी को बीजापुर जिला, कोरसेली गांव में अर्द्धसैनिक बलों, छत्तीसगढ़ पुलिस व एसटीएफ ने हमला कर गांव में साधारण जीवन बिताने वाले कामरेड सलीम (सम्मिरेड्डी) को पकड़कर अगले दिन आवुनार गांव के पास ले जाकर गोली मार दी।
- 5–8 फरवरी के मध्य माड़ डिवीजन (नारायणपुर जिला) के गट्टाकल गांव पर छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र के पुलिस बलों और सीआरपीएफ ने सैकड़ों की संख्या में हमला कर तबाही और लूटपाट मचाई। गांव में क्रांतिकारी जनताना सरकार द्वारा संचालित आश्रम पाठशाला को जला डाला।
- 4 फरवरी को सिंगम और रेंगम गांवों पर हमले कर गांव की महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया।
- 12–13 जनवरी को बीजापुर जिले के गंगलूर के निकट पिड़िया गांव पर पुलिस व अर्द्धसैनिक बलों ने भारी विध्वंसकाण्ड मचाया। घरों में घुसकर मनमानी लूटपाट की और उसके बाद 20 घरों में आग लगा दी। डोडी तुमनार में जनता द्वारा क्रांतिकारी जनताना सरकार के नेतृत्व में संचालित आश्रम पाठशाला को जलाकर राख कर दिया।
- 19 जनवरी को गढ़चिरोली जिला, अहेरी तहसील के गोविंदगांव में ग्रामीणों के साथ बैठक कर जा रहे गुरिल्लों पर पहले से मिली खबर के आधार पर पुलिस ने घात लगाकर हमला किया जिसमें कामरेड्स शंकर लकड़ा (डीवीसीएम), विनोद कोड़ोपी (अहेरी दल कमाण्डर), गीता कुमोटी (प्लाटून–14 की उप कमाण्डर), मोहन कोवासी (डिप्यूटी कमाण्डर) के अलावा सदस्य कामरेड्स लेब्बे गावड़े और जूरू मट्टामी शहीद हो गए।
- 19 जनवरी को छत्तीसगढ़ के कांकेर जिला, भुरभुसी गांव में स्नान करते समय गुरिल्लों पर बीएसएफ ने गोलीबारी की जिसमें दो महिलाएं कामरेड्स सनोति और सुमित्रा शहीद हो गईं।
- जनवरी के दूसरे सप्ताह में एपी–छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित ग्राम निम्मलागूड़ेम में हमला कर दो ग्रामीण महिलाओं को ले जाकर वर्दी पहनाकर मार डालने की कोशिश की। बाद में अदालत में पेश किया।
- चरला व दुम्मुगूडेम के इलाकों में तथा छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती गांवों में एपी पुलिस ने गांवों पर लगातार हमले कर सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। आंध्रप्रदेश–छत्तीसगढ़ की सीमा पर हाट बाजारों को बंद किया जा रहा है।

उपरोक्त घटनाएं चंद उदाहरण भर हैं। और भी असंख्य घटनाएं आए दिन घट रही हैं। आदिवासी किसानों को गिरफ्तार कर उन्हें इनामी नक्सली घोषित कर फर्जी मामलों में फंसाकर जेल भेजा जा रहा है। झूठी गवाही से कठिन कारावास की सजाएं दी जा रही हैं।

शोषक शासक वर्ग अपने दमनात्मक हमलों के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक युद्ध को भी संचालित कर रहे हैं। मीडिया के जरिए यह प्रचारित करवा रहे हैं कि माओवादी नेता बीमार होकर बिस्तर पर पड़े हैं और काम नहीं कर पा रहे हैं। यह झूठा प्रचार करवा रहे हैं कि माओवादी नेता पैसा लेकर भाग रहे हैं। समर्पण कर चुके

लोगों के जरिए यह दुष्प्रचार करवा रहे हैं कि पार्टी में महिलाओं का शोषण किया जा रहा है और जबरन नसबंदी करवाई जा रही है। दूसरी ओर सरंडर पालिसी का बार–बार प्रचार करते हुए सिर पर कीमत लगा रहे हैं। हथियार लेकर भागकर आने वालों को लाखों रुपए का इनाम देने की घोषणाओं के साथ बड़े पैमाने पर पोस्टर लगवा रहे हैं। इधर पुलिस व अर्द्धसैनिक बल सिविक एक्शन प्रोग्राम के नाम से गांवों में लोगों को तरह–तरह का सामान बांट रहे हैं। लुटेरी सरकारें अपने एलआईसी हमले के तहत सैनिक दमन के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक युद्ध और ढोंगी सुधार कार्यक्रमों को तेज कर रही हैं।

देश भर में क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करना, देश के विभिन्न क्रांतिकारी संघर्ष के इलाकों में विकसित हो रही जन राजसत्ता को खत्म करना, इसके द्वारा देश की अनमोल प्राकृतिक संपदाओं को साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों की कार्पोरेट कम्पनियों के द्वारा लुटवाने की राह में आ रही बाधाओं को दूर कर लेना ही इस हमले का मकसद है। इस हमले की अगुवाई सोनिया–मनमोहन–चिदम्बरम–शिंदे–जयराम रमेश शासक गिरोह कर रहा है, जबकि विभिन्न राज्य सरकारें इसमें तालमेल के साथ भाग ले रही हैं। टाटा, मित्तल, जिंदल, एस्सार, अल खैमा, नेको जयस्वाल्स आदि दलाल व विदेशी कार्पोरेट कम्पनियों के साथ किए गए लाखों रुपए के एमओयू को इसलिए कार्यान्वित नहीं किया जा रहा है क्योंकि देश भर में जनता प्रतिरोध कर रही है और कई इलाकों में इस प्रतिरोध का नेतृत्व भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) कर रही है। इसीलिए आज माओवादी आंदोलन देश के लुटेरे शासक वर्गों की नजर में 'बहुत बड़ा खतरा' बन गया। इसीलिए साम्राज्यवादी, दलाल नौकरशाह पूंजीपति और सामंती वर्ग इसका अंत करने पर आमदा हैं।

जनता से हमारा आह्वान है कि वह अपनी रक्षा के लिए, अपने एकजुट प्रयासों के बल पर अपना भविष्य खुद ही तय करने के लिए और अपनी जनवादी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए साम्राज्यवादियों और उनके पालतू कुत्ते भारत के शोषक शासक वर्गों की तमाम आर्थिक, राजनीतिक व दमनात्मक नीतियों का मजबूती से विरोध करें तथा उनके भाड़े के पुलिस, अर्द्धसैनिक व सैन्य बलों का दृढ़तापूर्वक सामना करें। हम देश के मजदूरों, किसानों, छात्रों, बुद्धिजीवियों, जनवादियों और तमाम देशभक्तों से अपील करते हैं कि वे इस हमले का खण्डन करें और इसे रोकने की मांग करें। क्रांतिकारी संघर्ष के क्षेत्रों में डेरा जमाए हुए तमाम अर्द्धसैनिक बलों को वापस लेने तथा सेना के प्रशिक्षण कार्यक्रम को बंद करने की मांग करें। हमारा सेंट्रल रीजनल ब्यूरो समूची जनता का यह आह्वान करता है कि इस हमले के खिलाफ आगामी 27 अप्रैल को सेंट्रल रीजियन के क्षेत्र में (उत्तर तेलंगाना, आंध्र–ओड़िशा सीमांत क्षेत्र, दण्डकारण्य, महाराष्ट्र के गढ़चिरोली व गोंदिया जिलों तथा मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले में) बंद रखा जाए। शिक्षण संस्थाओं, व्यापारिक संस्थाओं, रेल व परिवहन आदि सभी गतिविधियों को बंद रखकर लुटेरी सरकारों को यह बताया जाए कि हम इस हमले का खण्डन करते हैं। (हालांकि छात्रों की परीक्षाओं और चिकित्सा आदि आवश्यक सेवाओं को बंद से मुक्त रखा जाएगा।)

प्रताप

प्रवक्ता

सेंट्रल रीजनल ब्यूरो

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)